P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 Vol-I* Issue- VII* October - 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817

Remarking An Analisation

महात्मा गाँधी : अहिंसा सिद्धान्त

रवीन्द्र कुमार
अध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
सेण्ट ऐण्डयज कालेज,
गोरखपुर, उ0प्र0

सारांश

गाँधी जी ने शताब्दियों पूर्व के "अहिंसा परमो धर्म" सिद्धान्त को पुनर्जीवित किया है। उनका मत है कि "अहिंसा का पालन करने वाला केवल ईश्वर से भयभीत रहता है।"[1] अहिंसा से तात्पर्य केवल हिंसा का निषेध नहीं हैं, बल्कि उसका अर्थ पूर्ण प्रेम भी है। यह निषेधात्मक सिद्धान्त के साथ–साथ भावानात्मक सिद्धान्त भी है। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा संसार की सबसे अधिक क्रियाशील शक्ति है। किन्तु, जो कमजोर और डरपोक हैं, अहिंसक नहीं बन सकते हैं। अहिंसा का पालन वही व्यक्ति कर सकता है जो साहसी और बलवान है और जो जिसमें पशुबल से अधिक आत्मबल है। "जिस व्यक्ति में सहन शक्ति नहीं है और जो मृत्यु से भयभीत रहता है उसे अहिंसा की शिक्षा नहीं दी जा सकती है। जो कायर हैं उनकी अहिंसा से रक्षा नही की जा सकती।"[2]

मुख्य शब्द : अहिंसा, सिद्धान्त, सत्य, प्रेम, सिद्धान्त।

प्रस्तावना

गाँधी जी ने अहिंसा को व्यापक अर्थ में प्रयुक्त किया है। अहिंसा हिंसा का निषेध मात्र नहीं है। वह जैसे को तैसा आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत का निषेध मात्र नहीं है। किसी व्यक्ति को विचार, वाणी और कर्म से हानि न पहुँचाना ही अहिंसा है। अतः, सभी प्राणियों के प्रति स्नेहभाव रखना भी अहिंसा है।

अहिंसा निष्क्रियता का सिद्धान्त नहीं है। अहिंसा संसार की सर्वाधिक क्रियाशील शक्ति है यह सर्वोत्कृष्ट नियम है। गाँधी जी कहते हैं कि "कठोरतम धातु भी पर्याप्त ताप के आगे पिघल जाता है। इसी प्रकार कठोर से कठोर हृदय भी अहिंसा के ताप के आगे द्रवित हो जाता है। ताप उत्पन्न करने की अहिंसा की क्षमता की कोई सीमा नहीं है। मेरे सामने अपने पचास साल के अनुभव में ऐसी स्थिति कभी नहीं आई, जब मुझे यह कहना पड़ा हो कि मेरे पास इसका कोई अहिंसक इलाज नहीं है।"[3]

अहिंसा के दो रूप है

राजनीतिक के रूप में स्वीकृत अहिंसा और सिद्धान्त के रूप में स्वीकृत अहिंसा। गाँधी जी ने ब्रिटिश शासन से आजादी पाने के लिए राजनीति के रूप में अहिंसा को ठीक माना था। सिद्धान्त के रूप में अहिंसा, सत्य और प्रेम आधारित समाज की नवीन व्यवस्था की स्थापना के लिए एक शक्तिशाली हथियार है। परन्तु अहिंसा के जिस रूप का भी समर्थन किया जाए, तथ्य यही रहता है कि जब तक एक व्यक्ति अहिंसा का समर्थन करता है, उसका समर्थन करने वाला श्रद्धालु, भक्त स्वेच्छा से इसके प्रति अपनी अवस्था को नहीं बदल सकता है। अतः, गाँधी जी "राजनीति में अपनाई गई अहिंसा को कमजोर की अहिंसा कहते हैं और सिद्धान्त के रूप में अपनाई गई अहिंसा को बलवान की अहिंसा कहते हैं। पहले प्रकार की अहिंसा में यह भाव आता है कि हमने अहिंसा को इसलिए स्वीकार किया कि हम हिंसा नहीं कर सकते हैं, जबकि बलवान की अहिंसा से यह अभिप्राय है कि यद्यपि हममें हिंसा करने का सामर्थ्य है, फिर भी हम इससे दूर भागते हैं और हमने हर हालत में अहिंसा का व्रत धारण कर रखा है। दूसरे शब्दों में, हम इन दो प्रकार की अहिंसा को बाधित अहिंसा और स्वैच्छिक अहिंसा के नाम से सम्बोधित कर सकते है।"[4] अहिंसा के जिस रूप का भी समर्थन किया जायेवह मनुष्य में विद्यमान एक सदगुण है। मनुष्य को हीन और व्यक्तिगत स्वार्थ के बन्धन से मुक्त करके, उसे ऊँचा उठाने वाली अन्य जीवों के लिए सहानुभूति के प्रति चेतनशील बनाना है। अहिंसा की उपादेयता को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी ने कहा है कि "अहिंसा हवाई वाष्प बनकर उड़ जाने

वाली वक्तृता, पारस पत्थर, जीवन का अज्ञात अमृत और जादूगर का ताबीज नहीं है।यह मनुष्य का कभी न गलती करने वाला परामर्शदाता है, उसकी आन्तरिक ज्योति है, सब प्राणियों के प्रति प्रेम प्रकट करने वाली इसकी आन्तरिक दिव्यता है।"[5]

गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा के सम्बन्ध पर भी प्रकाश डाला है। सत्य परम शुभ है, यही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। अहिंसा इसकी प्राप्ति का साधन है। अहिंसा के माध्यम से सत्य की प्राप्ति में कोई संदेह नहीं रहता है। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा का पालन किए बिना सत्य का साक्षात्कार सम्भव नहीं है। सत्य और अहिंसा व्यवहार में अविभाज्य हैं। यदि एक उच्चतम नियम है तो दूसरा उच्चतम कर्त्तव्य है। एक के अभाव में दूसरा अर्थ और सार्थकता को नष्ट कर देता है। गाँधी जी ने अहिंसा को नैतिकता का उच्चतम रूप स्वीकार किया है क्योंकि सत्य की पूर्ण अनुभूति अहिंसा के पूर्ण पालन से होती है।[6]

अतः, सत्य और अहिंसा घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। गाँधी जी ने सत्य और अहिंसा को एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में स्वीकार किया।"[7]

गाँधी जी सैद्धान्तिक दार्शनिक नहीं थे, फिर भी उनके नैतिक विचारों का निष्पक्ष मूल्यांकन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि उनमें उपयोगितावाद, अन्तः प्रज्ञावाद, पूर्णतावाद के मूल तत्व विद्यमान है। उन्होंने स्पष्टतः उपयोगितावाद का समर्थन तो नहीं किया है, किन्तु उनकी अहिंसा, प्रेम, सहयोग, सर्वोदय आदि की शिक्षा उपयोगिता नियम की ओर संकेत अवश्य करती है। वह मूल रूप में उपयोगितावादी नहीं है, क्योंकि शुभ और अशुभ का निर्धारण उन्होंने उपयोगिता के आधार पर नहीं किया है। वास्तविकता यह है कि उनके चिन्तन में उपयोगितावाद की अपेक्षा आत्मपूर्णतावाद के तत्व अधिक स्पष्टता से प्रकट होते हैं। उन्होंने भी पूर्णतावादियों के समान ईश्वर को ही सत्य, प्रेम तथा अन्य सभी नैतिक मूल्यों का आधार स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त, गाँधी जी ने स्वयं को अन्तः प्रज्ञावादी तो नहीं माना है, फिर भी वह शुभ–अशुभ का नैतिक मानदण्ड के रूप में समर्थन करके अपने नैतिक चिन्तन में अन्तः प्रज्ञावादी तत्व का समावेश कर लेते हैं।

गाँधी जी की स्वराज्य, स्वदेशी और सर्वोदय की अवधारणा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये ऐसे आदर्श हैं जिन पर उनका दृष्टिकोण संतुलित है और इसीलिए उचित है तथा प्रशंसनीय भी है। ये आदर्श आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, इसलिए जन–कल्याण की दृष्टि से, सामान्य परिस्थितियों में, उनकी उपलब्धि प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्त्तव्य है और इसका अनिवार्यतः पालन वांछनीय है।

उद्देश्य

गाँधी जी की सत्य, अहिंसा, स्वदेशी और सर्वोदय की अवधारणा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह ऐसे आदर्श है जिनपर उनका दृष्टिकोण संतुलित है और इसीलिये उचित और प्रशंसनीय भी है। यह आदर्श आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

गाँधी जी ने वस्तुतः कोई नवीन सिद्धान्त प्रस्तुत नहीं किया है, फिर भी विश्वबन्धुत्व की भावना से प्रेरित होकर दी गई उनकी सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग आदि की शिक्षा वर्तमान में किसी देवदूत की वाणी से कम नहीं है। गाँधी जी के सिद्धान्त तत्कालीन परिस्थितियों में अत्यन्त उपयोगी थे। आज भी उनका मूल्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. The votary of ahimsa has only one fear,that is of God."M.K.Gandhi: Towards the Lasting Peace; P. 149.
2. Non-Violence cannot be taught to a person who fears to die and has no resistance. Before he can understand non-violence he has to be taught to stand his ground, and even suffer death in the attempt to defend himself against the aggressor who bids fair to overwhelm him. To do otherwise would be to confirm his cowardice and take him farther way from non-violence. Whilst I may not actually help anyone to retaliate, I must not let a coward seek shelter behind non-violence so called "M.K. Gandhi : Young India, Aug. 11, 1920.
3. B. Pattabhisitaramaya: Gandhi aur Gahdhivada, P. 47.
4. Ibid, P. 49
5. Ibid, P. 67–68
6. "He considered non-violence or ahimsa as the highest form of ethics, for, a perfect vision of truth can only.follow a complete realization of ahimsa".–K. Damodaran, Indian Thought ; P. 441.
7. "Truth and non-violence are to me faces of the same coin."–M.K. Gandhi : Towards Lasting Peace; P. 3